

## शूलों से भी जीना सीखो

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जीवन में सुख—दुःख का आना स्वाभाविक है। सुख में न तो अधिक सुखी और दुःख में न अधिक दुःखी होना चाहिए। सुख—दुःख जीवन के दो पड़ाव हैं। चक्र के पहिए की तरह ऊपर नीचे होते रहते हैं। जो व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करके आगे बढ़ता है वह जीवन की हर परिस्थितियों को सहन कर सकता है। कहा गया है नाविक की धैर्य परीक्षा क्या जब धाराएं प्रतिकूल न हो अर्थात् नाविक अनुकूल धारा में तो नाव आसानी से चला लेता है, किन्तु हवा के विपरीत यदि वह नाव को मंजिल तक पहुंचाता है तभी उसके धैर्य की परीक्षा है। प्रतिकूलता में अनुकूलता को ढूंढना वीरों का कार्य है। जो व्यक्ति कठिन परिस्थितियों में जीवन को आगे बढ़ाता है वह दुःखों से हार कभी नहीं मानता। वह दुःखों पर विजय प्राप्त करता है। कष्टों को सहन करना, दुःखों को सहन करना, प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करना और परीषहों को सहन करना कष्ट सहिष्णुता है। सहनशीलता, समभाव, राग—द्वेष से मुक्ति और सभी प्राणियों के साथ आत्मवत् दृष्टि रखना सद्गुण है। जब तक मानव में राग—द्वेष रहता है। तब तक वह मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकता है। यह जगत दो दृष्टियों से विचारणीय है— इन्द्रिय जगत, भीतर का जगत। इन्द्रिय जगत बाह्य जगत है, इसे लौकिक जगत कह सकते हैं। आन्तरिक जगत आध्यात्मिक जगत है, यही भीतर का जगत है। यदि कोई व्यक्ति कष्ट प्रदान करता है तो इसका प्रतिरोध कई प्रकार से किया जा सकता है। लेकिन सबसे अच्छा ढंग सहनशीलता है। यदि प्रतिक्रिया की जाती है तो लड़ाई—झगड़ा होना निश्चित है। यदि परिस्थितियों को सह लिया जाता है तो टकराव टल जाता है। सहिष्णुता की पहचान यही है कि टकराव टालिए, टकराव विवाद को बढ़ाता है और सहिष्णुता मित्रता पैदा करती है। आज मानव की निगाहों में मानव का पतन हो चुका है। वह व्यक्ति को कीट पतंग से अधिक कुछ भी समझने के लिए तैयार नहीं। आत्मीयता जो मानव की एक विराट चेतना स्पन्दन है, आज लगभग जड़ बन चुकी है। यदि कुछ है तो वह कुछ इने गिने, पारिवारिक व्यक्तियों तक सीमित हो चुका है और उसके स्थान पर भयंकर घृणा का विष भर चुका है।

घृणा के तपेदिक से पीड़ित मानव जीवन की जो आज स्थिति है वह किसी से छिपी हुई नहीं है। यह रोग आज घर में व्याप्त है। घृणा के ही प्रभाव से सत्य और न्याय की सरेआम हत्या होती है। सद्गुण की अवहेलना होती है और योग्य व्यक्ति का भी तिरष्कार होता है। इन्हें घर में फैलाना चाहिये— कोई छोटा नहीं, कोई तुच्छ नहीं, कोई पराया नहीं। अपनत्व और सम्मान का जितना अधिक विस्तार होगा, टकराव का विष उतना ही नष्ट होता हुआ चला जाएगा। सामाजिक संरचना के क्षेत्र में रचनात्मक कार्यक्रमों का सर्वाधिक महत्व है। समाज जो भी हो निश्चय ही वह जबर्दस्त शक्ति का भंडार होता है। शक्ति का व्यय नहीं करेगा तो व्यय होता सामर्थ्य गलत कार्यों की तरफ मुड़ जाएगा। समृद्धि का कारण मद्यपान, माँसाहार शिकार, जुआ, सट्टा, परस्त्री गमन आदि पापों का सामाजिक निषेध है। आज भी हम देखते हैं कि दो देशों के बीच कभी सीमा विवाद को लेकर कभी किसी आर्थिक मामलों को लेकर टकराव की स्थिति बन जाती है। अगर स्थिति का सही ढंग से निपटारा न हो पाया तो दो देशों के बीच युद्ध की संभावना प्रबल हो जाती है।

भारत एक ऐसा राष्ट्र है जो अपने पड़ोसी देशों के साथ मैत्री भाव और समता, सहअस्तित्व की नीति अपनाता है। टकराव को टालने का भरसक प्रयास करता है। यही कारण है कि आतंकवादी हमलों को झेलने के बावजूद भी सहनशीलता का परिचय देते हुए टकराव को टालता रहता है। सहनशीलता मानव का सबसे बड़ा गुण है। जिस मानव के अंदर यह गुण रहता है वह महान कहलाता है। जो व्यक्ति जितना सहन करके चलता है उसका चरित्र उतना ही ऊंचा होता है। चरित्र वह हीरा है जो टूटकर जुड़ता नहीं। चरित्र निर्माण मानव की स्वाधीन प्रक्रिया है। चरित्र ही ऐसा है जिसे मानव गढ़ सकता है। यह उसके अपने अधिकार का विषय है। किसी व्यक्ति को किसी बुराई का परित्याग करने को कहा जाता है तो अक्सर उत्तर मिलता है कि क्या करूं मैं मानता हूँ कि यह कार्य गलत है किंतु मेरी आदत पड़ गई है, आदत छूटना बड़ा कठिन है। कई तो यहां तक कह देते हैं कि मैंने इस आदत को त्यागने का खूब प्रयास किया किन्तु मैं इसे छोड़ नहीं सका। ये सारी बातें जो अक्सर आया करती है, जिन्हें सुनकर मैं हैरान रहता हूँ। मैं एक बात पूछता हूँ ऐसे व्यक्तियों से कि भाई तुम अपनी आदत को बदल नहीं सकते तो बताओं क्या बदल सकते हो? चांद—सूरज बदल सकते हो या

धरती आसमान को बदल सकते हो? क्या अपने एक सफेद बाल को भी काले बाल में बदल सकते हो? वास्तविकता यह है कि मानव कुदरत के सिद्धान्तों को बदलने में नितांत असमर्थ है। हां एक ही बात व्यक्ति के अपने हाथों में है, और वह है अपने आपको बदलना। यह कैसी विडंबना है कि जो मानव कर सकता है उसके लिए ही कहा करता है कि मैं यह नहीं कर सकता। चरित्र निर्माण के संबंध में पहली आवश्यकता है व्यक्ति अपनी आत्म-शक्ति को पहचाने। अपने आप में एक अनंत शक्ति का स्रोत निरंतर प्रवाहित है, इस ध्रुव सत्य को आत्मसात कर लिया जाए।